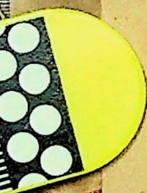
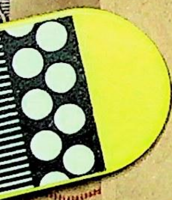





8.1,22
37575





जड़ गाम

द्वितीय संस्करण



श्रीधर पाठक



ऊजड़ ग्राम

इंगलैंड के प्रसिद्ध कवि गोल्ड्स्मिथ् के
'डिज़र्टेड् विलेज्' का अनुवाद.

पंडित श्रीधर पाठक कृत

"लसत लहलही जहां सघन सुन्दर हरियाई
तहं अब ऊसरमयी भयी, नसिगयी निकाई"

THE DESERTED VILLAGE

In Hindi

BY

PANDIT SRI DHARA PATHAKA

SECOND EDITION.

Allahabad:

PRINTED AT THE NEWUL KISHORE PRESS.

1906.

PRINTED AT THE NEWUL KISHORE PRESS,
ALLAHABAD.

गोल्ड्स्मिथ् का कुछ वृत्तान्त और ग्रन्थ का सार ।

गोल्ड्स्मिथ् इंगलैंड के उत्तम कवियों में गिना जाता है। इस्की तीन रचना बड़ी मनोहर हैं और अंग्रेज़ों को बहुत प्यारी लगती हैं-(१) हर्मिट (The Hermit) जिस्का अनुवाद 'एकान्त वासी योगी' में खड़ी हिन्दी के पद्य में प्रकाशित कर चुका हूं; (२) डिज़र्टेड् विलेज् (The Deserted Village) जिस्का उल्था यह है और (३) ट्रावलर (The Traveller) जिस्का भाषान्तर मत्कृत "श्रान्त पथिक" है इनके अतिरिक्त कई एक गद्य ग्रन्थ भी उस्के ब[illegible] प्रतिष्ठित हैं।

इस काव्य में गोल्ड्स्मिथ् ने एक गांव के उजड़ जाने पर शोक प्रकाश किया है जिस्का संक्षिप्त विवरण आगे दिया हुआ है। इस गांव में गोल्ड्स्मिथ् के लड़कपन का बहुत सा भाग व्यतीत हुआ था। अंग्रेज़ी विद्वानों के अनुसार यह गांव गोल्ड्स्मिथ् की जन्म-भूमि आयरलैंड में था, यद्यपि इस काव्य में स्पष्ट रूप से एक इंगलैंड के गांव का वर्णन है।

गोल्ड्स्मिथ् एक निर्धन साधारण पादरी का पुत्र था। उसे उत्तम शिक्षा मिलने की कोई सम्भावना न थी, परन्तु उसके फूफा की उदारता से उसे बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त हुई। तदन्तर उसे पहले पादरी की

वृत्ति, फिर क़ानून (धर्मशास्त्र) और फिर डाक्टरी (वैद्यक) सिखाने का प्रबंध किया गया, पर उस्की अस्थिर. चञ्चल प्रकृति और कई और त्रुटियों से इन्में से कोई भी प्रयत्न फलीभूत न हुआ। गोल्ड्स्मिथ् ने अपने लड़कपन के अध्यापक से जिस्का वर्णन इस काव्य में २६७ से २९६ पंक्ति तक है विदेशाटन की प्रीतिग्रहण करली थी जिस्का फल यह हुआ कि वह हालैंड के लीडन् नगर से जहां कि उस्के फूफा ने उसे वैद्यक समाप्त करने भेजा था पास का सब दाम नष्ट कर पैदलही पर्यटन के लिये चल दिया। और सारे फ़्लेन्डर्स्, सारी जर्मनी, और फ्रांस् और इटली के कुछ भागों में कोई साल भर तक बिचरता रहा। इस भ्रमण में उसका भोजन वस्त्र गांव २ बंसी बजाने और गाना सुनाने से चलता था। इन दोनों व्यवसायों में गोल्ड्स्मिथ् को कुछ अभ्यास था। जब अपने फूफा की मृत्यु के समाचार पाये, देश को लौटा। इंगलैंड में आकर उसने पहले कुछ दिनों डाक्टरी की, पर उसमें लाभ न देख कर अन्त को समाचारपत्रों और कविता को अपनी जीविका का आधार बनाया। बस तभी से गोल्डस्मिथ् की वह कीर्त्ति लता आरोपित हुई जो इंगलैंड की साहित्य वाटिका में अब तक 'नित नूतन' बनी है।

गोल्ड्स्मिथ् देखने में कुरूप था। उसे द्रव्य का सदा संकोच रहा, पर रुपया हाथ आजाने पर उसे अमीरों की तरह उड़ा देता था और शीघ्रही फिर

अकिञ्चन होजाता था। दानी बड़ा था। उदारता उसके हृदय में असीम भाव से निवास करती थी। पर निर्धनों को यह गुण प्रायः अवगुण का फल देता है। यदि गोल्ड्स्मिथ् को अपव्यय की बुरी बान न होती तो उसे वह द्रव्य संकट न देखना पड़ता जिस्के कारण उसकी आयु का पिछला भाग कड़वा होगया था वह सन् १७२८ में उत्पन्न हुआ और १७७४ में २००० पौंड का ऋणी मरा। इस कवि का सविस्तर जीवन वृत्तान्त बहुत शिक्षा पूरित और लाभदायक है।

लन्दन के प्रसिद्ध श्मशानालय उएस्ट्मिन्स्टरएब्बी में लोग अब तक गोल्ड्स्मिथ् की समाधि देखने जाते हैं।

'ऊजड़ गाम' का विषय विन्यास।

इस काव्य में मुख्य विषय ये हैं-

१.	औबर्न की सुख सम्पत्ति की अवस्था-	१ पं. से ५० पं. तक
२.	औबर्न की उजड़ जाने पर अवस्था-	५१ ,, ७० ,,
३.	इंगलेंड की पहली और वर्तमान अवस्था का मिलान।	७१ ,, १०६ ,,
४.	कवि का क्रन्दन (खेद प्रकाशन)-	१०७ ,, १३४ ,,
५.	एकान्त की महिमा और एकान्त-वास का सुख दर्शन।	१३५ ,, १५८ ,,
६.	औबर्न की पहली और वर्तमान अवस्था।	१५९ ,, १९२ ,,

तक
,,
,,
,,
,,
,,
,,
,,
,,
,,

विज्ञप्ति

मैं ने इस काव्य का अनुवाद हिन्दी में इस लिये किया है कि यहां के वे लोग जो अंग्रेज़ी नहीं जानते उस भाषा की कविता का कुछ अनुभव करसकें। एक देश के काव्य का जिस्में कि वहां की जातीय बातें विशेष हों दूसरे देश की भाषा के पद्य में अनुवाद कर पूर्ण रस दिखा देना एक यदि असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन कार्य है । पर जहां तक मुझ से हो सका कवि के भावों को उपयुक्त रीति ही से दरसाया है। अधिक भाग अनुवाद का पंक्ति प्रति पंक्ति है, इस कारण से त्रुटि इस्में विशेषतर होंगी, परन्तु विश्वास है कि गुणग्राही हिन्दी रसिक इस क्षीरनीरसम्पर्क में कुछ स्वादु अवश्य पावेंगे।

श्री प्रयाग,
मार्गशिर, सं० १९४६.

श्रीधर पाठक

निवेदन

हिन्दी रसिक सुजान,

नागरी नागर नीके
नित नव चाखनहार काव्य आनन्द अमी के
नवकवितामधुमधुप, नवल कुसुमन के प्रेमी
हिन्दीहितनितनिरत, निरन्तर निश्चल नेमी
काव्यकलामर्मज्ञ, सरसकवितारसकोविद
अखिल अलौकिक उत्तमताउद्देश्यतत्वविद
पक्षपात बिन गुन अरु दोषन के परखैया
राजहंस सम छीर नीर सों छीर गहैया
यदपि न तुम्हरे योग्य कोऊ या में सुघराई
भाव अनूपमताई वा रचना रुचिराई
यद्यपि या में सबै भांति सों दोष अनेकन
विविध बड़ाई पावन अपनावन गुन एक न
तदपि दया उर धारि अहो ! अंगीकृत कीजै
अपने जन की वस्तु जानि अपनी करिलीजै

ऊजड़ ग्राम

हे प्यारे औबर्न[१] सकल ग्रामन सों रूरे
जहां श्रमी कृषिकार[२] बसैं सुख सम्पति पूरे
जहां रसीली ऋतु बसन्त पहले ही आवत
जात समय बिलमाय फूल फल देर लगावत
प्यारी प्यारी वे मलूक हरियाली कुञ्जैं
सोभा छवि आनन्द भरीं सब सुख की पुञ्जैं
निर्दूषन निश्चिन्त जनन के मन की भावनि
मेरी लरिकाई की बैठक भूमि सुहावनि
खेलमात्र जब नाम लेत लागत हो प्यारौ
समय सबै बीतत हो आनंद सहित सुखारौ १०
कितनौ मैं डोल्यौ हूं तेरे हरित थलन में
जहां लगैं सब दृश्य दीन सुख[३] सों प्रिय मन में
ठहर्यौ कितनी बार निहारत प्रति सुघराई
छांहयुक्त कहुं कुटी कहूं कृषि भूमि निकाई

१ Auburn–गांव का नाम जिसके ऊजड़ होने का वर्णन है। टीकाकार इसे लिस्सोय (Lissoy) गांव का जहां कि गोल्डस्मिथ के लड़कपन का अधिक भाग व्यतीत हुआ था एक कल्पित नाम बताते हैं–यह गांव आयरलैंड में था।

२ क्रोड़पत्र देखो। ३ दीनसुख = दीन जनों का सुख। क्रो. प. देखो।

सदा बहत जलस्रोत[१], चलत पनचक्की सोहै
पास पहाड़ी ऊपर गिरजाघर मन मोहै
"हौथौरन"[२] की झाड़ी छाया जासु मनोहर
परी भईं पीढ़िन की पंगति पतवर पतवर
जहां बृद्ध बातून विविध बातें बतरावत
नेही निज प्यारीन श्रवन निज नेह सुनावत २०
कितिक वार पुनि पेख्यौ है वा दिन कौ आवन
जा दिन अस के ठौर खेल मचतौ मन भावन
मिलकें सब ग्रामीन काम अस बन्धन छोरी
सुघर समाज बनाय जात हे बृच्छन ओरी
विस्तृत छाया बीच अनेकन खेल मचावत
युवा करत तहं होड़ बृद्ध निरखत सुख पावत[३]
बहु प्रकार सों नाच कूद आनँद अठखेली
मचत रही तिहि ठौर ललित लीला अलबेली
बाजीगर के खेल बहुरि नट विद्याहू के
अचरज उपजावन भावन मन सब काहू के ३०
बार बार करि खेल एक जब हीं थकि जाहीं
करन दूसरे की उमंग उपजै मन माहीं

१ सदा बहता हुआ झरना।
२ Hawthorn.-एक प्रकारका झाड़ जिस पर छोटे२ बेर (berry) लगते हैं। इंगलेंड में इस की बहुधा खेतों में बाड़ लगाते हैं।
३ कों. प. देखो।

नाचन हारेन की जोड़ीं जो चहत बड़ाई
नाचत नाचत एक दूसरे हि देत थकाई
अवलोकिय पुनि छैल जासु मुख करि चतुराई
काहू ने काहू विधि सों कारोंछि लगाई
ताहि न याकौ ज्ञान, लखत जब लोग लुगाई
मचत गुप्त मृदु हंसी चहकि चहुं ओर सुहाई
सकुचीली क्वारिन की पुरुषनपै बगलौंही
चाहभरी देरलौं चारु चितवन तिरछौंही ४०
महतारिन करिकें तिन कौ आंखिन में तर्जन
बेटिन कौं अनुचित अनुचित बातन सों बर्जन
रहीं सबै ये बात गाम तेरी मनहरनी
ये कौतुक ये लीला उर अति आनँदकरनी
बारी बारी आय लगत हीं सब कौं प्यारी
श्रम हूं कौं सुख ही सुख देन सिखावनहारी
ये तुअ कुञ्जन विषैं पुञ्ज आनँद बरसावहिं
मन रञ्जन मोहनी मंजु सोभा सरसावहिं
सो तेरी सब बात सकल मनमोहन हारीं
अपनौ ठाम बिहाय, हाय ! सुर धाम सिधारीं ५०
ललित छबीले गाम सकल पटपर में नीके
सुख सुखमा की खानि परम प्रिय भावन जी के
चले गये तुअ खेल, गई सोभा सब तेरी

हिय बसराखन हारिनि, मनमोहनी घनेरी
उन कुञ्जन के मांहि जहां इतनी छवि छाई
अन्यायी कौ हाथ दिखावत है निठुराई
लसत लहलही जहां सघन सुन्दर हरियाई
तहं अब ऊसरमयी भयी, नसि गयी निकाई
परी एक के हाथ भूमि तेरी सब सुन्दर
होत अधूरी जोत, रहत धरती बहु बञ्जर   ६०
सो निर्मल अब सोत नहिं नभविम्ब दिखावत
किन्तु घास तृन रुक्यौ मन्द मारग भुगतावत
तुअ बन मारग मांहि निपट पाहुनौ अकेलौ
"बिटरन"[१] अंडा धरत नाद उच्चरत डरेलौ
सूनी रौसन विषैं उड़त खग "लैपविंग"[२] पुनि
कूकि कूकि चिल्लाय मचावत विकल प्रतिध्वनि
वे तेरे द्रुमभवन[३] भये आकार रहित सब
लम्बी लम्बी घास छई भीतिन ऊपर अब
अरु वे तेरे पूत[४] निठुर के हाथ परे जब
ह्वै व्याकुल भयभीत दूर तजि देश गये सब   ७०

१ Bittern.—बगले की जाति का एक पत्ती जो कि डरावना और रूखा शब्द बोलता है।

२ Lapwing.-यह पत्ती इंगलैंड में दलदलों और नदियोंके किनारे पाया जाता है-और टिटहरी (टिट्टिभ) की भांति का होता है, जिसे आगरे की तरफ़ दिहात में "टटाटीवली" कहते हैं।

३ द्रुम भवन=कुंजें, Bowers.   ४ अर्थात् तेरे निवासी।

धन वैभव जहं बढ़त प्रजा छीजत जहं जाई
नहि मंगल तिहि भूमि अमंगल नित नियराई
कुमर और उमराय बनैं बिगरैं कछु नाहीं
फूंक माहिं वे बनत फूंक ही सों मिट जाहीं[१]
पै दृढ़ कृषिकसमाज, देस कौ सांचौ गौरव
नास भयें एक बार फेरि उपजन नहिं सम्भव
समय एक वह रह्यौ आज कालि के अगारी
रही न कोई बात प्रजागन की दुखकारी
याही इंगलिस्तान माहिं बीघा[२] भरि धरती
अपने जोता कौ पूरन प्रतिपालन करती ८०
थोरे ही श्रम माहिं मिलत हो ताहि घनेरौ
जीवन की मरजाद निबाहन कों बहुतेरौ
मन की निर्दूषनता, तन निर्दोखिलताई
रहे तासु सुभ साथी सम्पूरन सुखदाई
धन वैभव का होत कबहुं सपने नहिं जाना
यही बड़ो धन सर्वोपरि आनन्द निधाना

१. क्रो. प. देखो। २. मूल में रूड (Rood) है।

८३ से ८६ तक की चार पंक्तियां जो मूल की दो पंक्तियों का आशय खोलती हैं दो में भी हो सक्ती हैं, यथा–

संगी वाके निर्दूषन मन, निर्दोखिल तन ।
धन वैभव अज्ञान, सोई सब सों उत्तम धन ॥

पै उलटे अब समय भये औरहि तें औरहि
दया रहित व्यौपार घेरि बैठ्यौ सब ठौरहि
धरती लई छिंड़ाय कृषिक गन दिये भगाई
कियौ आप अधिकार हिये छाई निठुराई ९०
सो सुन्दर मैदान रहे पुरवा जहां छाये
भारी धन विस्तार आज तिहि पर्यौ दबाये
बहुविधि भोग विलास जनित बहुविधिअभिलासा
बहु बस्तुन की चाह करत निस दिन तहं बासा
त्यों वे सब वेदना खेद पीड़ा दुखदाई
जिन बखसीसति सदा घमंड हि मूरखताई
वे कोमल सुख घरीं निरन्तर आनँदवारीं
विपुल सम्पदा भरीं हियौ हुलसावन हारीं
वे थिर लघु अभिलास ठौर थोरौ जो मांगत
थोरेहि में ह्वै जात तृप्त, मन अधिक न लागत १००
वे सुख दाई खेल, देहि छवि जो तिहि थाना
प्रति चितवन में बसें सरस आरोग्य निधाना[१]
हरित भूमि के माहिं छटा अपनी फैलावें
अति विनोद आमोद युक्त अनुभव उर लावें
ये सबरे बिलगाय बसे काहू सुभ देसा
अरु ग्रामीन विलास रीति अब रहीं न सेसा

१ शरीर को आरोग्य देने वाले।

सुठि सौंधे श्रौबनं, जनक सुखयुक्त घरी के
सकल मनोहरता वारे प्यारे सब ही के
ये तेरे बनपन्थ परे सुनसान उजारू
करत सबै स्वीकार निर्दयी कौ अधिकारू ११०
यहां आज मैं डोलत ज्यों साथीन बिनाहीं
रुकी भई बाटन में अरु उजरी भुइं माहीं
बहु बरसन के बीते पुनि निरखत उन ठौरन
रही जहां एक कुटी और ठाड्यो "हौथौरन"
सुधि मन में एक संग गये दिवसन की आवति
भरति उसासन छाती दुख हिय में उपजावति
अपने सबै भ्रमण में या चिन्तित जग माहीं
अपने बट[1] के दुख हू में दिन रैन सदा हीं
रही मोहि जिय आस आपने अन्त पलन की
इन लघु[2] कुञ्जन माहिं मूंदि दृग धन्य करन की १२०
बुझती बार संवारन कों जीवन की बाती
थिरता सों थिर राखन कों तिहि ज्योति सुहाती
रही और हू आस बहुरि मो कौं पुजवन कों
(बन्यौ रहत अभिमान सदा जो हमें सबनकों)
उन कृषिकारन बीच दिखावन कों चतुराई
जो मैं पोथिन मांहि पढ़ी सीखी अरु पाई

१ बट = भाग, हिस्सा, Share. २ लघु = दीन ।

सांझ समय अगिहाने[१] निज मीतन कों जोरी
अपनी कथा सुनावन तिन के बीच बहोरी
जो कछु मो पै बीत्यौ मम आंखिन जो देखौ
ता को तिन्हें बतावन कों सम्पूरन लेखो १३०
अरुखरहा[२] जिमि अधिकस्वान[३] सिंगिन[४] कौ धायौ
दौरत हांफि भिटे ही कों सत्रून सतायौ
मो हू कों तिमि रही आस बहु दुक्ख बिताई
मरतौ याही ठौर अन्त अपने घर आई

अहो सुखद एकान्त ! धाम आनँद पुनीत के
मीत सुजीतव की घटती[५] के अरु अतीत के
सब चिन्ता सों अलग जहां सुख करत निवासा
किन्तु जासु दरसन हू की मो कों नहिं आसा
परम धन्य वह पुरुष जो कि इन छांहन माहीं
श्रम सों युवा बिताय वृद्ध वय में सुख पाहीं १००
तजत तहां कौ वास जहां लालच बलवाना
दमन तासु लखि कठिन, बचत है बुद्धि निधाना

१ अगिहानै = अगिहाने पर। अगिहानौ = अग्निस्थान, Hearth वा Fireplace.
२ खरहा = ख़रगोश, Hare. ३ स्वान = कुत्ता।
४ सिंगी = सींग बजाने वाले शिकारी। क्रो. प. देखो।
५ जीतव की घटती = Life's decline, आयु का पिछला भाग वा वृद्धावस्था।

कोउ न ता के काज दीन दुखिया सुख हीना
(रुदन सहित श्रम करन जन्म जग में जिन्ह लीना)
खोजत, खोदत खानि, दुखित जीवन कों खेवत
अथवा भयपूरित अथाह सागर कों सेवत
ना कोउ ड्योढ़ीबान पाप जामा[1] तन धारें
करन निरादर जाचक कौ ठाड्यौ तिहि द्वारें
पै सुख सों जग माहिं वास करि सो नर उत्तम
भेटत क्रम अनुसार भाग जीवन कौ अन्तम १५०
दूत स्वर्ग के रहत निरन्तर तासु सहाई[2]
सत जीवन, सत वृत्ति आदि उत्तम गुन पाई
करत प्रवेश समाधि[3] अन्त, सो सहज स्वभावहि
काया की हानि कौ ज्ञान हू होन न पावहि[4]
या जग सों छुटि जात मोह माया की डोरी
सुख मय मारग खुलत दूसरे जग की ओरी
अरु सम्पूरन आस अन्त लों बाढ़त जाहीं
होत स्वर्ग आरम्भ तासु जगत्याग बिनाहीं[5]
रह्यौ मधुर सो शब्द श्रवनमनमोहन कारी[6]
जाकी धुनि दिन मुदें यहां आवत ही प्यारी १६०

१ अर्थात् पाप से सञ्चित उसके स्वामी के धन से बनी हुई वर्दी।
२ को. प. देखो। ३ समाधि = क़बर. a grave. ४ को. प. देखो।
५ अर्थात् मरने से पहले ही उसे स्वर्ग के सुख का अनुभव होने लगता है। ६ को. प. देखो।

जब या परले पर्वत पै सुख दायक जी कौ
सुनियत हो अभिराम ग्राम ममंर रव नीकौ
वहां जबै मैं निकसत हो निश्चिन्त सुखारी
मृदुल मिश्र आवत हो नीचे सों सुर प्यारी
कलित ग्वालिनी गान ज्वाब[१] छैला जिहि गावैं
त्यों गौअन के जूथ मिलन बछरान रँभावैं
शब्द शील कल हंस बारि बिच रारि मचावैं
खेल भरे जो बाल तुरत शाला तजि धावैं
रखवारे कूकुर के बोल हु की आवत धुनि
मृदु बतरौंही ब्यारि ओर भूसत जो पुनि पुनि १७०
अट्टहास[२] की रोर निचिन्तित मन की द्योतिनि
कलितकिलकिलामिलित मोद उर भाव उदोतिनि
ये ह्वै मिश्रित सकल सरस सुस्वादु सुहाये
सुनियत हे उन छांहन में सब के मन भाये
पूरत हे कल कोकिल के बोलन कौ अन्तर
रसपूरितरवयुक्त रह्यौ सो ठाम निरन्तर
पै अब एक न शब्द मनुष्यन कौ सुनि परही
एक न आनँद बोल ब्यारि सँगसँग ममंरही
निकरत कारजरत[३] कोइन इन पग डंडिन में
घनी घास जमि गयी सहज स्वाभाविक जिनमें १८०

१ ज्वाब = उत्तर। २ अट्टहास–उच्चस्वरहास a loud laugh.
३ कारजरत = कार्य में रत ; कामकाजी लोग।

किन्तु सबै जनवासजनित जीवन कौ जोवन[१]
गयौ पलाय परस्पर सुख व्यवहार विनोदन[२]
बची सबन में दीसत एक हि वस्तु बिचारी
सोता के तट नुहरत[३] जो लखि परियत नारी[४]
अति दूबर बल हीन दीनता की एक मूरति
वृद्ध अभागी दुखी दुक्ख के दिनन बिसूरति
उदर हेतु नित आय साग सोता सों तोरति
झाड़िन में त ईंधन तापन काज बटोरति
सांझ भयें पुनि जाय शयन ठौर हि तहं सोवति
काटति दुख की रात प्रात लौं रोवति रोवति १९०
रही यही एक सकल निरपराधिन में शेषा
वा पटपर कौ कहन शोक इतिहास अशेषा

वा झाड़ी के पास रही बगिया जहां विलसत
जहां अबहु बहु बाग पहुप आपहि सों उपजत
वहां, जहां कछु बिरले बिरवा ठौर जतावत
रह्यौ ग्राम उपदेसक कौ घर सुघर सुहावत
रह्यौ बड़ौ सो सुजन देस सबरे कों प्यारौ
चालिसपौंडहि[५] साल माहिं अतिसय[६] धनवारौ

१ बस्ती के कारण चुहल। २ आपस में सुख युक्त व्यवहार से जो आनन्द मिलता था। ३ नुहरत = झुकती वा नवती हुई।
४ एक बुढ़िया जो औबर्न के पुराने निवासियों में से रह गयी थी।
५ पौंड (Pound)—एक सोने का मुद्रा जो आज कल लगभग १५) के होता है। ६ अत्यन्त।

बस्तिन सों बहु दूरि धर्म में आयु बितावत
निजपदकबहुं नतज्यौनत्यागनकों मन लावत२००
स्वारथ साधन काज न करन खुशामद जानै
ना अवसर अनुसार पलटि मत मारग मानै
कछू और ही बात बसत ही वा हिय माहीं
दुखियन पै जो ध्यान तितौ निज ऊपर नाहीं
अगवैया फिरवैया वाकौ घर पहंचानैं
बरजै तिन कौ डोलन सो, पै दुख हरि जानैं
होय पुरानौ पहंचानौ पाहुनौ भिखारी
छाती लों है फैली जाकी डाढ़ी भारी
दिवालिया अतिव्ययी गरब टूट्यौ है जा को
आवै पावै तहां सबै सुख निजजनता[1] कौ २१०
छीन हीन बल जोधा वा के घर जो आवै
दया सहित आदर सों अपने ढिंग ठहरावै
अगिहाने पै रात रात भरि तासु कहानी
सुनै शोक सों भरी वीरता के रस सानी
घायन के लगिवे के छिन कौ दुख दरसावन
युद्ध समय के घात, मोरचा शत्रु नसावन

१ निजजनता सगी नातेदारी वा मित्रता आदि का निकट सम्बन्ध। अर्थात् उसे वहां सगे का सा सुख मिलता था।

वैसाखी[१] धरि कन्ध शस्त्र चातुरी दिखावन
किमि जीते रन खेत बड़ी विधि सों समझावन
अपने इन अतिथिन सें ह्वै प्रसन्न सो सज्जन
उनके दुख में भूलिजाय उनके दूषन गन २२०
गुन अवगुन उन के पै नेक हु दृष्टि न जाती
दया दान के पहले ही हिय माहि समाती

या विधि दीन दुखीन उवारन को अभिमानी
त्रुटि हू वा की सबै धर्म की ओर झुकानी[२]
किन्तु आपने कृत्य माहि उद्यत प्रति अवसर
प्रगटै पूर्न सहानुभूति[३] सबही के ऊपर
दुख सुख में ह्वै साथी सब की चिन्ता राखै
सब के हित हरि भजै भलौ सब को अभिलाखै
अरु पंछी जिमि प्यार सहित करि विविध उपाई
निज बच्चन कों देत उड़न आकास सिखाई २३०
त्यों ही सो प्रत्येक जतन सें लोगन माहीं
फैलावत हो परमारथ अनुराग सदाहीं
प्रति अवसर चेताय करिय ना[४] सुभ में देरी
उपजावत हो प्रीति धर्म की ओर सवेरी

१ वैसाखी=सहारेदार लाठी। २ क्रोड़पत्र देखो।
३ सहानुभूति=हमदर्दी, sympathy.
४ करिय ना=न करनी चाहिये।

परलोक हि की ओर सबन के जिय कों लावै
सत मारग दरसाय आप अगुआ ह्वै धावै[१]
पास वाहि वा शैया के अवलोकहु जाई[२]
होन चहत है जहां प्रानपरलोकबिदाई[३]
जहां पाप, पछताव, कठिन पीड़ा दुख दाई[४]
बारी बारी भय भारी युत घेरत धाई[५] २४०
पाय तासु आदेश निराशा जाय पलाई
काल यातना दुखित आतमा सों बिलगाई[७]
शान्ति भाव उत्पन्न विकल जिय में ह्वै आवै
भय कम्पित पापी कों पूरी आस बंधावै
खण्डित अन्तिम बचन जासु ईश्वर गुन गावैं
जीवन भरि के पाप सहज ही में नसि जावैं
देवालय में उपासना हित वह जब आवै
नम्र अकृत्रिम[८] रहन तासु सब के मन भावै
वाके कारन सो पावनथल[९] सोभा पावै
देखत ही लोगन के उर एक आनँद आवै २५०
सत्य तासु मुख तें दुहरौ प्रभाव फैलावै [१०]
निन्दक क्रूर कुतर्किन हू मारग पै लावै

१–७ क्रोड़पत्र देखो।
८ अकृत्रिम=साधारण, सीधी सादी, unaffected.
९ अर्थात् देवालय। १० क्रोड़पत्र देखो।

करन हेतु उपहास तहां मूरख जो जावें
ते हू पीछें करहिं प्रार्थना अरु पछतावें
उपासना के पीछे वाके चारों ओरी
दृढ़ उछाह सों घिरें सरल ग्रामीन बहोरी
बालक हू लगि लेंय संग करि प्रिय खिलकौरिन
पकरैं जामा तासु लहन मुसिक्यान एक छिन
सुलभ तासु मुसिक्यान पिता सम प्रीति जतावै
तिन कौ सुख सुख देय ताहि, चिन्ता दुखियावै २६०
हृदय, प्रेम अरु शोक तासु तिन मध्य समाये
पै सब गूढ़ विचार परम पद में थिति पाये
जिमि कोउ पर्वत शृंग तुंग दीरघ तन ठाड़ौ[1]
उठ्यौ खड्ड सों रहै, बवंडर बीचहि छांड़ौ[2]
यदपि तासु वक्षस्थल दल बादल कोलाहल[3]
भाल विराजै सदा भानु आभा दुति उज्जल[4]
वह जो खंडित मेंड़ बनी दगरे के पाहीं
बौरि रहे जहं 'फ़र्ज़'[5] व्यर्थ सुन्दर[6] दरसाहीं

१-४ क्रोड़ पत्र देखो।

५ Furze—एक कांटेदार सदा बहार झाड़ी जिसमें सुन्दर सुनहले फूल लगते हैं। यह इंग्लैंड के मैदानों और पहाड़ों में बहुत होती है

६ व्यर्थ सुन्दर क्योंकि ये फूल सुन्दर होने पर भी किसी काम में नहीं आते।

वाही के ढिग तहां शब्द पूरित मन्दिर महि[1]
रह्यौ पढ़ावत गुरू आपनी लघु चटसालहि २७०
शासन में परवीन, चलन में अति निरदूखौ
रह्यौ एक वुह कठिन पुरुष, देखन में रूखौ
जानत हो मैं भली भांति सों वाहि सदाही
अरु प्रत्येक खिलाड़ी[2] पहंचानत हो ताही
दण्डपायवेवारे बालक वा मुख माईं
प्रात समय लखि जानत हे दिन की कठिनाईं[3]
बहुत हंसत हे सबै, ऊपरी हर्ष दिखाई
वाकी सब हांसिन पै, ही जिन की बहुताई[4]
तुरत कान ही कान तासु रिस की चहुं ओरी
पहुंचजाति ही खबरि सबनभय भरी बहोरी २८०
हो वुह किन्तु कृपालु, और जो कछुक निठुर मन
विद्या विषयक तासु प्रेम हो या कौ कारन
सबरौ गाम बखानत हो वाकी विद्वानी
लिखिवे में सन्देह न, गिनवे हू में ज्ञानी[5]

१ महि = में।

२ खिलाड़ी = आवारा लड़का (a truant) जो खेलकूदमें अधिक मन लगावे और पढ़ने से जी चुरावे।

३ दिन में बीतने वाली कठिनाइयां (दंड आदि)।

४ अर्थात् वह मास्टर हंसी की बातें भी बहुत करता था।

५ अर्थात् हिसाब किताब में।

धरती लेतौ नापि, यहू देत हो बताई
परि हैं कब त्यौहार, कचहरी आदिक आई
मिती ज्वार भाटा हू की शीघ्र ही निकारै
लोग कहत हे भरे माल कू कूति हु डारै[1]
मानत हो तर्क में पादरी तिहि चतुराई
हारि जाय पै तहू तर्क करतौ ही जाई २९०
वाद[2] माहि जो बड़े शब्द विद्या के आवें
सुनि अचरज युत लोग जुरे चितवत रहि जावें
चितवत ही वे रहें और अचरज अधिकाई
इक लघु मांथे में तिहि विद्या सकल समाई !
पै बीत्यौ सब तासु नाम, अरु अब वा थान हिं
जहं जीत्यौ बहु वार वाद वुह, कोउ न जानहि

वा परली झूकटी निकट, ऊंची जो दीसत
नाम खम्भ[3] हो जहां कबहुं पथिकन दृग खींचत
सो घर है अब पर्‌यौ भूमि तल पै ह्वै नीचौ
देत रह्यौ उत्साह मद्य जहं जव सों खींचौ[4] ३००

---

१ गज़ (gauge) आदि के द्वारा भरे हुए बोरों या पीपों के माल की कूत कर लेता था।

२ वाद = विवाद, तर्क, शास्त्रार्थ, बहस।

३ नामखम्भ = Sign-post—खम्भा जिस पर मकान के नाम का तख़्ता लगा था।

४ क्रोड़पत्र देखो।

जहां वृद्ध जन जाय हास्य आमोद मचावैं
युवा अमी मुसिक्यानि भरे, आनँद हित जावैं
गौरव सों नीतिज्ञ गाम के जहं बतरावैं
बड़े पुराने समाचार चारों दिसि धावैं
सुधि वा आनँद थल की सोकों पुनि पुनि आवति
मन में पानसभा[1] की सब सोभा सरसावति
पुती सेत वह भींति, बिछी भुइं में सुठि रेती
खटकत सुन्दर घड़ी द्वार ढिग सोभा देती
बनी सुघर सन्दूक काम द्वै साधन हारी
रात समय में मञ्च और दिन में अलमारी ३१०
चित्र टंगे तहं सोभा और प्रयोजन दाई
बारह नीके नियम, "हंस चौपर" लटकाई[2]
अगिहाने के ऊपर, जड़कालेन छुड़ाई
"आसपेन[3]" की डार, फूल, "फैनिल[4]" छवि छाई
तथा चाय के टूटे प्याले विधि सों साजे
"चिमनी" के ऊपर एक पंगति माहिं विराजे
वृथा छनिक सो सोभा ! नहि सब सकी बचाई
वा बोदे घर कों गिरिवे तें, होय सहाई ?

---

१ मदिरालय। २ क्रोड़पत्र देखो।

३ Aspen. एक प्रकार का वृत्त।

४ Fennel. एक पौधा जो अपने बीजों की सुगन्ध केकारण वाटिकाओं में लगाया जाता है।

धस्यौ जात अज्ञात, देयगौ सो अब नाही
एक घरी हू की गरीब मन गौरवता ही ३२०
कबहुं न तहां पधारि ग्राम्य जन पग अब धरि हैं
मधुर भुलौनी माहिं नित्य चिन्ता हि विसरि हैं
ना किसान अब समाचार तहं आय सुनै हैं
ना नाऊ की बातें सब कौ मन बहलै हैं
लकड़हार कौ विरहा कबहुं न तहं सुनि परि हैं
तान श्रवन आनन्द उदधि कबहूं न उमरि है
मांथौ पोंछि लुहार, काम सों तहं रुकि है ना[१]
भारी बलहि ढिलाय, सुनन बातें झुकि है ना
घर कौ स्वामी[२] आपु दीखि है तहं अब नाहीं
झाग उठे प्याले कों फिरवावत सब पाहीं ३३०
ना क्वारी नव वाला सरमीली कोऊ तहं
पान हेतु पूछी जैवौ चाहै जो मन महं
सरल सलौनी सुन्दर साधारन हिय भोरी
चूमि पियाला पहुंचै है औरन की ओरी[३]
धनी करहु उपहास तुच्छ मानहु किन मानी
दीनन की यह लघु सम्पति साधारन जानी
मोहि अधिक प्रिय लगै अधिक ही मो हिय भाई
सबरी बनावटिन सों एक सहज सुघराई

१ पास ही मदिरालय के एक लुहार अपनी दूकान रखता था।
२ मदिरालय का मालिक। ३ क्रोड़पत्र देखो।

आप हि उपजौ मोद स्वभाव हि कौ उमँगायौ
गहत चित्त अरु मानत तिहि बल प्रथमहि जायौ ३४०
सुख सों ऐसौ मोद रमै रीते[१] मन माहीं
विघ्न, ईरषा, अवधि रहित, स्वच्छन्द सदाहीं
पै बहु विस्तृत ठाठ बाठ निसि नाच स्वांग सब
धन अधिकाई के अरु लम्पटता के कर्त्तब–
इन में आधी चाह पूर्न ह्वैवे के पूरब
थकामनौ आमोद दुसह बनि जाय दुक्ख सब
अरु जिहि छिन कृत्रिम रचना अत्यन्त लुभावै
पूछत मन शंकित, का आनँद यही कहावै ?

अहे सत्य के मीत, नीति के हे जनवैया
धन प्रभुता की वृद्धि, दीन दुर्गति निरखैया ३५०
तुम्हें बिचारन योग्य बात यह समझि निरन्तर
दिखावटी अरु सुखी देस में कितनौ अन्तर
उठत गरवयुत ज्वार लदी धातुन सों भारी[२]
स्वागत तिहि शठ प्रगटि हर्ष निज देस मझारी[३]
जग में हैं भंडार सूम तृष्णा सों हूं पर

१ चिन्ता अथवा तृष्णा आदि से शून्य।
२–३ सोना, चांदी आदि धातु द्रव्य से लदे हुए जहाज़ जब समुद्र की ज्वार के साथ उनके देश में पहुंचते हुए दिखाई देते हैं, मूढ़ लोग उनका बहुत हर्ष से स्वागत करते हैं।
स्वागत = स्वागत करते ह।

धनी गिरें भहराय जगत के तिन के ऊपर
पै सोचहु जो लाभ, नाम कौ केवल यह धन
राखत ज्यों की त्यों जो सकल काम की चीजन[१]
किन्तु हानि इमि नाहिं, धनी मानी नर एक हि
घेरत सबरौ थान रहे जहं दीन अनेक हि ३६०
चहत ठौर निज ताल तथा बागन कों विस्तृत
घोड़ा, गाड़ी और सिकारी स्वानन हू हित
पाटम्बर जो तासु आलसी अंग उढ़ावत
सो खेतन की आधी उपज लूटिकें आवत
वा कौ ग्राम निवास[२] अकेलो वुही रमत जहं
निदरि हटावत हरित भूमि सों दीन कुटिन कहं[३]
देस माहिं प्रत्येक चाँहती[४] वस्तु जु उपजत
विविध भोग वस्तुन पलटे जग दिसि दिसि पहुंचत
अरु इमि सबरी भूमि सजी केवल क्रीड़ा हित
कोरी सोभा में हेरत अपनौ विनास नित ३७०
जिमि कोउ सुन्दर नारि सिँगाररहित साधारन
जानति निज मनहरनशक्ति जोवन के कारन

---

१ लाभदायक वस्तु (जो उसी देश में उत्पन्न होती हैं)।
२ ग्राम निवास = दिहात में जो महल वा कोठी वह अपने निवास के लिये बनवाता ह। ३ कहं = को।
४ जिसकी चाह अधिक रहती हो, अर्थात् काम की।
५ ऐश अशरत की चीज़ों के बदले में दूसरे देशों को भेजदी जाती हैं।

निदरति सुन्दर वसनजनित सोभा सुघराई
कृत्रिम छवि सों नैन आदि नहि रचति बनाई
पै जोवन छवि ढरें क्योंकि छवि ढरनहार सब
और अवस्था बढ़ें, यार तजि दें य प्यार जब
सजति साज सों तबै रूपमोहनी बनाई
सकल विफल सिंगार चमक चौगुनी दिखाई
ऐसें ही वुह भूमि भोग तृष्णा की मारी
रही प्रथम जो प्रकृतिसरलछविधारन हारी ३८०
निज विनास नियराय व्यर्थ बहु ठाठ बढ़ावत
तरु वीथिन अरु भवनन सों प्रभाव उपजावत
तब वा सुखी[१] भूमि सों दुसह दुकाल सतायौ
दुखी कृषिक निज दीन कुटुम लै जात पलायौ
अरु जब वुह विनसात, बचावनहार न कोई
लसत देस कहुं बाग कहूं मरघटमय होई[२]!
कहौ कहां तब हाय! दीन जन बसि है जाई
गरबीलेन के ढिग कौ दुसह दबाव बचाई
जौ वुह काहू पटपर की सीमा में जावै
निज पशून कों हांकि अलप तृन तहां चरावै ३९०
अवधिहीन वे खेत बँटे हैं धनिकन माहीं
तृनदूवर[३] मैदान हु में वाकों कछु नाहीं

१ ओड़पत्र देखो। २ ओ० प० देखो। ३ जिसमें बहुत ही थोड़े तृन इत्यादि हैं।

जौ वह जाय नगर में, तहं भेटत का ताही ?
प्रचुर विभव विस्तार भोगि सो सकै न जाही
सहसन दुष्ट उपायन सों तहं होत भयंकर
विषयवासनातृप्ति, मनुजकुलनास निरन्तर
भोगपरायन पुरुषन कौ प्रत्येक अधम सुख
उपजत है सहजीविन[१] कों पहुंचाय दुसह दुख
कनकजटितपटमढ़्यौ लसत इत राजसभानर[२]
उत पियरौ तन शिल्पकार[३] श्रम करत रोगभर ४००
ठाठ बाठ युत निकसत हैं एक ओर ठसकधर
पास सड़क के चमकत सूली उतै भयंकर
कहुं आनंदआगार[४] मचत लीला निशीथ जहं
देत प्रवेश धसावत भड़कीली भीड़न कहं[५]
चकाचौंधयुत चौक[६] बीच तहं होत कुलाहल
खड़खड़ गाड़ी लड़त[७] जरत पंसाखा झलझल
सांचु हि इन दृश्यन में चिन्ता धसन न पावत
सांचु हि ये सब[८] एक निरन्तर सुख दरसावत !

---

१ सहजीवी = परमेश्वर की बनाई इस पृथ्वी पर साथ रहनेवाले अर्थात् Fellow-creatures.

२ राजसभा नर = राजसभा गामी, सभासद, Courtier.

३ कारीगर । ४ आनँद आगार = नृत्य क्रीड़ा आदि के स्थान ।

५ कहं = को । ६ आनन्दागार की वहिर्भूमि ।

७ क्रीड़ा में युक्त होने को आये हुए धनिकों की गाड़ियां घमसान के कारण भिड़ जाती हैं ।

८ ये सब—जिन का वर्णन ३९९ से ४०६ पंक्ति तक किया गया है ।

का ये तुम्र सुविचार ?–अरे लै उतहु निहारी
जहां दीन, घरहीन, परी ठिठुरत वुह नारी ४१०
रही कदाचित कबहुं गाम में सो सुखवारी
रोय चुकी पै निरदोषिन की सुनि सुनि ख्वारी
वा की सरल चितौन कुटिन देती सुघराई
जिमि वसन्त नव फूल झूकटी तले लखाई[१]
पै अब सब सों विमुख, खोय मित्रन अरु धर्म हि[२]
निज छलिया के द्वार परी पटकत है कर्महि
और सीत सों सिसकि मेह सों देह बचावति
शोक सहित वा कुघरी कों पुनि पुनि मन लावति
बिन सोचें जब प्रथम नगर में वसिवे कारन
तज्यौ कातनौ रहंटा, पहरन पट साधारन[३] ४२०
क्यों हे प्रिय औबर्न, सकल तेरी ललनागन
वे सुरूप सुन्दरीं करत अनुभव तिहि कष्टन ?
चाहों वे या छिन हि सीत अरु छुधा सताई
गरवीलेन के द्वार टूक मांगति हैं जाई
हाय हाय नहिं ! वे तो दूर विदेस पधारीं
आधी पृथ्वी परे लांघि तो सों भइं न्यारीं

१ क्रोड़पत्र देखो। २ सतीत्व वा सत्त को।
३ गांव में रहने की वृत्ति। गांव की चाल। अर्थात् अपना गांव त्याग दिया।

कठिन तप्त भूमि में ह्वै गिरते पग धावति
जहं उदंड "अलटामा[१]" तिन दुख नाद सुनावति[२]
निपट भिन्न वा सब सों जो पहले हो सुखथर[३]
विविध त्रास सों पूरित हैं वे भूमि भयंकर ४३०
वह प्रचण्ड रवि सूधी किरन गिरावनहारौ
दुसह दिवस के समय अनल बरसावनवारौ
अगम घोर बन, जहां गान भूलत पक्षीगन
जहां मौन चिमगीदड़ दल ओंघत टँगि साखन
विपुल उपज सों भरे खेत विस्तृत वे विषमय
कारौ बीछी जहां बटोरत काल गरल चय
पग पग पै जहं पथिक डरत रवयुक्त[४] जगावन
कुञ्चलदण्डदायक भुजंग कौ क्रोध भयावन
छिपे रहत जहां बाघ अहेरहि हेरन हारे
और वन्य नर उनहूं सों विशेष हत्यारे ४४०
अरु बहुधा जहं आंधी बड़े वेग सों आवति
भूमि स्वरूप विनासि तुरत नभ माहि मिलावति

१ Altama—उत्तर आमेरिका की एक नदी। २ अर्थात् अपने नाद से मानों उनके दुःखों की प्रतिध्वनि करती है। ३ सुखस्थल।

४ रैट्ल्स्नेक् (Rattle-snake) नामक आमेरि[illegible] में एक ज़हरीला पीला सांप होता है. उसकी पूंछ के अंत में सींग की भांति के छोटे २ जोड़ रहते हैं जिन से उसके चलने में खड़खड़ाहट होता है। इसी से 'रवयुक्त' विशेषण।

बहुत भिन्न ये पहले के प्रत्येक दृश्य सों
सीतल सोता अरु तृन भूषित थल प्रशस्य सों
मन्द अनिल कल गुञ्ज युक्त कुञ्ज सों बहोरी
जहं होती निर्दोष नेह की केवल चोरी[१]

हरे राम! किमि शोक मयो वा दिन ह्यां[२] छाई
जा दिन जन्म भूमि सों उनकी भई बिदाई
देस निकासे दुखिया जब सब सुखन गमाई
रहे अन्त अवलोकन हित कुञ्जन ठड़काई ४५०
भये देर में बिदा वृथा मन माहिं सनावें
पश्चिम सागर[३] पार ठौर ऐसे ही[४] पावें
अरु अगम्य विस्तार सिन्धु भेटन जिय डरपत
बगदि बगदि रोवत पुनि पुनि रोवन कों बगदत
पहले बूढ़ो बाप सुजन चलिवे भयो सज्जित
नूतन लोकन[५] कों, रोवत औरन के दुख हित
पै अपने हित, धर्म ज्ञान दृढ़ धीर बीर वर
चाहत उन हीं लोकन कों जो मरघट सों पर

१ क्रोड़पत्र देखो। २ ह्यां = यहां।
३ आटलांटिक महासागर जो आयरलेंड और आमेरिका के बीच में है।
४ अर्थात् ऐसी ही रमणीक कुञ्जें।
५ नव आविष्कृत देश अर्थात् आमेरिका जिसे 'नई दुनिया' भी कहते हैं। औबर्न से निकाले हुए लोग वहीं गये थे।

वा की सुन्दर सुता अधिक सुन्दर अंसुअन में[१]
नेह मोह युत साथिनि तिहि असमर्थ दिनन में[२] ४६०
चली मौन, ता पाछैं, सुधि नहि तन सुन्दर की
गही बाप की बांह छांड़ि प्रेमी प्रिय वर की[३]
ऊंचे सुर बिलखाय दुखित जननी उत विलपति
कुटि हि असीसति, रही जहां सब विधि सुख सम्पति
चूमति चिन्ता हीन बालकन बहु अंसुअन भरि
चिपटावति हिय ललकि दुक्ख में दुगुन नेह करि
स्वामी वा कौ प्रेम सहित धीरज बंधवावत
बिपति समय में, मौन, सहन सामर्थ्य दिखावत

अहो भोग अभिलाष ! ईश के घर सों स्रापित
कैसौ अनुचित बदलौ इन वस्तुन कौ[४] तुअ हित ४७०
किमि तेरौ मद, प्रथम कपटमय सुख दरसावन
फैलावत आनन्द, अन्त सर्वस्व नसावन
तो सों बढ़ि बढ़ि राज्य रुग्न उन्नति[५] लों जाहीं
करत घमण्ड शक्ति कौ जो उनकी निज नाहीं

१ जो रोते समय और भी सुन्दर और प्यारी लगती थी।
२ अर्थात् बुढ़ापे में ।
३ प्रेमी प्रियवर जिस्के साथ वह विवाह की युक्ति में थी।
४ क्रोड़पत्र देखो ।
५ असह्य वा दुःख दायक वृद्धि जिसे प्रजा सहन न कर सके ।

ज्यों ज्यों तुअ मद चढ़त बढ़त वे त्यों अधिकाई
फूलत, पोले परत, बनत हैं दुख समुदाई
तब सब बल सूँति गयें, अंग प्रत्यंगहु बिगरें
डूबत पद सों पतित, उजार मचावत सिगरें

हूं गयौ अब आरम्भ होन या थल कौ ऊजर
आधौ ह्वै हू चुक्यौ नाश कौ कर्म भयंकर ४८०
याहू छिन मोहि लगत जबै ठाड़ौ मैं सोचत
देखि रह्यौ हूं ग्रामिक गुन गन[१] देस हि मोचत
जहं वह लग्यौ जहाज पाल अपनौ फैलावत
सुचिताई सों पर्यौ पवन सों जो फहरावत
उत ही कों वे जात-दीन एक उदासीन दल
अन्धकार मय करत सिन्धुतट[२] वेला सों चल
सन्तोषी श्रम और अतिथि सत्कार माहिं रुचि
रति युत दम्पति प्रनय, परस्पर युगल प्रेम सुचि
हरि चरनन चित, चाह चलन हरि धाम सदाहीं
राज भक्ति दृढ़, अटल नेह, ये हैं उन माहीं ४९०

पंक्ति ४७६ से ४९० तक। इन में गोल्ड्स्मिथ् इस रीति से कथन करता है मानों उन ग्रामीणों का प्रयाण प्रत्यक्ष देख रहा है।

१ ग्रामीण गुणों का गण जिनकी गणना ४८७ से ४९० पंक्ति तक है।

२ वेला से चल कर सिन्धु के अति निकट तट को अन्धकारमय अर्थात् शोकाच्छादित करते हैं। वेला = समुद्र का सामान्य किनारा। सिन्धुतट = समुद्र का अति निकट तट।

अरु तू कविता मधुर परम सुन्दरि सुकुमारी
इन्द्रिय सुखथल[1] सदा प्रथम ही त्यागन हारी
तू अशक्त इन पतित पाप पूरित समयन में
लहन सुयश वा पहुंचावन प्रभाव हृदयन में
प्रिय मनमोहिनि देवि ! अनादृत अरु अवमानित
मम समाज बिच लाज, किन्तु अभिमान इकन्तित[2]
मेरे सबरे सुख अरु सबरे दुख की कारन
मैं जिहि मिल्यौ दरिद्र अबहु राखति मोहि निर्धन
तो सों लहि आदर्श बढ़त वर शिल्प कला सब[3]
सब सद् गुन की धाय, तोहि मैं पालागौं अब ५०० (500)
पालागौं ! पै अरी बोल तुअ सुन्यौ जाय जहं
"टोर्नो"[4] तट पर्वत वा "पम्बामार्का"[5] ढिग महँ
चाहों विषुवत वृत्त ज्वाल माला जहं दहकत[6]
अथवा जहां शीत ऋतु ध्रुव देसन हिम गहकत
तहां तहां तुअ बोल समय पै सदा पाय जय
दुसह देस कठिनाइन कों नित करहु सौख्यमय

---

१ वह जगह जहां इन्द्रियासक्त पुरुषों का प्राबल्य हो।
२, ३ क्रोड़पत्र देखो।
४ टोर्नो (Torno) नामक झील स्वीडन देश के अत्यन्त उत्तर भाग में है उसके किनारे की पहाड़ी वा ऊंची चट्टानों में।
५ Pambamarca—दक्षिण आमेरिका में एक पर्वत।
६ अर्थात् अत्यन्त तप्त देशों में।

निदरित सत्य सहाय करन कल गान सुनावहु
मूढ़ मनुष्य हि धन तृष्णा की घृना सिखावहु
समझावहु पुनि ताहि राज्य जो निज बलधारी
जदपि निपट धनहीन तदपि अत्यन्त सुखारी ५१०
बनिज दर्प युत राज्य देस कों बेगि बिगारत
जिमि बहु स्रम सों रचित बांध कों उदधि उखारत
निज बल आश्रित[१] किन्तु काल की झेलत व्याधिन
जिमि पर्वत चट्टान सिन्धुलहरिन अरु आंधिन

१ यह "राज्य" का विशेषण है।

क्रोड़पत्र ।

पंक्ति २-"कृषिकार" अंग्रेज़ी में Swain शब्द है जिस्के चार अर्थ हैं-(१) गंवई वा दिहात का रहने वाला जवान आदमी (युवा पुरुष) ; अतः (२) गंवार वा दिहाती ; (३) ग्रामीण रसिया ; (४) किसान का वा खेती बारी का नौकर । परंतु गोल्ड्स्मिथ् का अभिप्राय विशेष करके किसान से है. इसलिये यही अर्थ हम ने लिया है । इस का (३ पर्याय रसिक वा छैल) अनुवाद की २५ वीं पंक्ति में आया है ।

पंक्ति १२-इस पंक्ति के स्थान में चाहें यह पढ़िये-
जहां दीन सुख सहित दृश्य भावें सब मन में
वा उपजावत जहां प्रीति दीन सुख सब दृश्यन में-
गांव के सन्तोषी निवासी अनेक प्रकार की साधारण आमोद क्रीड़ाओं में पूरा सुख अनुभव करते थे-उसी सुख के कारण उन्हें वहां के "हरित थलन" का प्रत्येक दृश्य प्यारा लगता था । यह ग्रामीण सुख २३ से ४२ और ९७ से १०४ पंक्ति तक चित्रित है ।

पंक्ति२६-गोल्ड्स्मिथ्का तात्पर्यहै कि युवा जन खेलों में एक दूसरे से बढ़ने को यत्न करते थे अर्थात् अपनी२ प्रवीणता दिखाते थे और बूढ़े उन की लीलाओं को ध्यान से निहारते थे। हम ने पहले निम्न

लिखित पंक्तियां यहां के लिये बनायी थीं, परंतु अनुवाद मूल का अत्यन्त सन्निकट अनुगामी होने के कारण ये न रक्खीं-

विस्तृत छाया बीच मचावत बहु विधि लीला
चिन्ता कों बिसराय मुदित मन आनँद शीला
बाल युवा मिलि रहसि रहसि मंडली बनावहिं
बूढ़े तिन कों निरखि निरखि अतिशय सुख पावहिं
खेलन हारे आपस में सब झगड़त जाहीं
एक दूसरे सों बढ़िबौ चाहें मन माहीं

(आगे की पंक्तियां जो हमारे युक्त प्रदेश के ग्रामीण विनोद का कुछ २ चित्र उतारती हैं, पाठकों के लिये यहां संनिवेशित की जाती हैं)।

कूदत हैं कोइ बाल लेत फिरकनिया कोई
कोई कोई नाचत है तिरछे तन होई
कोई फाँदन में दरसावत हैं चतुराई
कोई झूलत हैं डालिन आधार बनाई
ढीठ पराई बांध दिखावत अचरज कोई[१]
निरखत तिनकी ओर और सब विस्मित होई
कोई अपनी देही के बल कों दरसावत
फेंकत गोला पत्थर के अरु नाल उठावत
कोई चढ़ि चढ़ि पेड़न पै कल्लोल मचावत
मोर चाल कोइ चलत भुजन को बल परचावत
मल्ल जुद्ध मिलि करत कहूं सम बल वय वारे
हारे पावत बाढ़, बड़ाई जीतन हारे

पंक्ति ७४-इस पंक्ति को चाहे यों पढ़िये-

बनत रहत वे सदा एक फूंकहि के माहीं

---

१ अर्थात् युवा।

पंक्ति १३१–"सिंगी"- अर्थात् शिकारी लोग जो सींग बजा कर अपने कुत्तों को मृगया भूमि में अपना वा अहेर का पता जताते थे।

पंक्ति १५१–"दूतस्व०" अंग्रेज़ों के धर्म में यह विश्वास है कि धार्मिक जनों की स्वर्गीयदूत गुप्त रूप से सदा रक्षा करते रहते हैं।

पंक्ति १५४–'काया क्षी०"–यह एक निश्चित बात है कि निरोग और सुखी प्राणी को मरते समय कुछ कष्ट अनुभव नहीं होता- उस्की मृत्यु वैसेही बिना कष्ट होती है जसे जन्म हुआ था।

पंक्ति १५९–"रह्यौ मधुर सो शब्द" के स्थान में "मीठौ हो वुह शब्द" (Sweet was the sound) भी रुचिता के साथ रखा जासक्ता है।

पंक्ति २२४–"त्रुटि०"–उस्के दोष धर्म ही की ओर झुके हुए थे–क्योंकि वह देश, काल, पात्र न देख कर सब की सहायता और आगत की स्वागत करता था।

पंक्ति २२५–सत्य का मार्ग दिखला कर उस मार्ग पर आप सब से प्रथम चलता था और यों औरों के लिये उदाहरण बनता था।

पंक्ति २३७–४२अंग्रेज़ों में जब कोई रोगी मरने वाला होता है तब उस की आत्मा को धीरज बंधाने और स्वर्ग प्राप्ति की आशा दिलाने को पादरी आता है–जैसे कभी २ हिन्दुओं में भी पंडित वा गुरु एतन्निमित बुलाया जाता है।

पंक्ति २५१–"सत्य तासु० "–उस्का उपदेश लोगों पर दूना प्रभाव पहुंचाता था–क्योंकि वह जिस सत्पथ का उपदेश करता था उसी पर आप चलता भी था-अर्थात् उपदेश और उदाहरण दोनों के द्वारा सत्य का सन्दर्शयिता था। और "पर उपदेश कुशल बहुतेरों" में न था।

पंक्ति २६३-६–ये चार पंक्तियां अंग्रेज़ी कविता में उपमा अलंकार के सब से उत्तम उदाहरणों में गिनी गई हैं। भाव यह है-वह धर्मोपदेशक यद्यपि औबर्न के निवासियों के सब सुख दुःख में युक्त हो उन्के कल्याण की चिन्ता रखता था, उन्के सुख से सुखी और दुःख से दुखी होता था, तथापि उस्के हृदय के गूढ़ विचार परलोक में स्थिति पाये हुए थे। जैसे कोई उच्च पर्वत शृंग वा चट्टान जो खड्ड से ऊपर उठी हुई रहती है–उस्के मध्य भाग में आंधी तूफ़ान वा बादल आदि प्रायः कोलाहल मचाते रहते हैं, पर चोटी पर सूर्य की उज्वल किरणों से निरन्तर प्रकाश छाया रहता है।

पंक्ति ३००-इस स्थल पर औबर्न की सराय वा "होटल" वा उस स्थान का वर्णन है जहां लोग काम से निश्चिन्त हो संध्या के समय आकर एक प्रकार का मद्य पान करते थे–यह पेय पदार्थ, यवाऽऽसव (जौ का रस), जायफल, शर्करा, केंकड़ा

और सेवों से बनता था-अंग्रेज़ जाति में मद्य पान दूषित नहीं समझा जाता- दूसरे प्रकार से यह पंक्ति यों हो सक्ती है-

"देत रह्यौ उत्साह जहां आसव यव खींचौ"

वा "पियौ जात हो जहां मद्य सेवन सों खींचौ"-

मूल में "Nut brown" का प्रयोग है जिस्से Ale की ध्वनि निकलती है-Ale के निर्माण में यवरस का प्राधान्य होने से हम ने "जव सों खींचौ" का प्रयोग किया है। "देत रह्यौ उत्साह" अर्थात् पीने वालों को आनन्द वा उमंग देता था।

पंक्ति ३११-१२-उस घर में तसवीरें जो लगी थीं उनसे शोभा भी थी और काम भी निकलता था। "बारह नीके नियम"-ये नियम इंगलैंडके बादशाह चार्ल्स् (प्रथम) ने होटल आदि सर्व साधारण स्थानों के लिये प्रचलित किये थे और संक्षेप से ये थे-

(१) पान करने का परस्पर उत्साह न उत्पन्न करो; (२) धर्म सम्बन्धी नियम न भंग करो; (३) राजकीय विषय न छेड़ो; (४) कोई गुप्त भेद न खोलो; (५) किसी प्रकार का कलह न करो; (६) (व्यक्तियों वा राज्यों के?) गुण दोष का मिलान न करो; (७) निन्दा न करो; (८) बुरा संग न रक्खो; (९) पाप को वृद्धि न दो; (१०) विलम्ब तक खाना पीना न मचाते रहो; (११) दुःखों का उद्गार न करो; (१२) किसी प्रकार की होड़ वा बाज़ी न लगाओ।

"हंस चौपर" (The royal game of goose)–एक खेल जो पासों से एक मेज़ पर खेला जाता था। मेज़ पर ६२ घर होते थे। ६३ वां घर जो कि केन्द्र में रहता था जीतने का घर होता था इसके प्रत्येक ४ थे और ५ वें ख़ाने में हंस की तसबीर बनी रहती थी। जब खेलने वाले की फेंक हंस पर पड़ती थी, वह अपनी फेंक की संख्या से दूनी चाल चलता था।

पंक्ति ३३४–अंग्रेज़ों में जब मद्य पान के अर्थ लोग एकत्र होते हैं तब यदि कोई स्त्री उनके साथ हों तो पहले उन्हीं का आदर किया जाता है और जब वे अवला स्त्री जनोचित सुशीलता सहित, सत्कार को ग्रहण कर लेती हैं, तदनन्तर पुरुष पान करते हैं– गोल्ड्स्मिथ् कहता है कि अब कोई कुमारी अबला वहां पान पात्र को चूम कर उसे लोगों की ओर न पहुंचावेंगी–स्मरण रखना चाहिये कि इंगलेंड में इस देश के विपरीत स्त्रियां पुरुषों के साथ यावत सामाजिक व्यवहारों में युक्त होती हैं। वहां, यहां की सी व्यर्थ लज्जा नहीं।

पंक्ति ३८३–"सुखी भूमि"–मूल में smiling land है जिससे भूमि के उपजाऊपन वा भरीपूरीपन से तात्पर्य है 'सुखी के स्थान में 'सुखद', 'सुभग', 'रुचिर', 'ललित', 'सरस', वा 'भरी' भी उपयुक्त होंगे अथवा पंक्ति को यों पढ़िये–

तव लह लही भूमि सों ... ...
भाव यह है कि भूमि हरी भरी और कृषि योग्य होने पर भी किसानों को दुर्भिक्ष और महंगी का भय होने के कारण उसे त्यागना पड़ता है।

पंक्ति ३८६–अथवा पढ़िये–
लसत देस एक संग वागमरघटमय होई

पंक्ति ४१४–यह पंक्ति दूसरी तरह यों हो सक्ती है–
जिमि गुलाब को फूल झूकटी बीच सुहाई–
मूल में Primorse है जो वाल वसन्त के कुसुम मात्र को द्योतित करता है।

पंक्ति ४४६–"जहं०"–जहां निर्दोष (अर्थात् विवाहेच्छु) प्रेमी युवा और युवती चोरी से मिलकर परस्पर प्रेम संलाप में एक दूसरे का चुम्बन, आलिंगन आदि (जो योरोपीय समाज में निर्दोष काम समझे जाते हैं) कर लेते थे। २० वीं पंक्ति भी पढ़ो।

पंक्ति ४७०–अथवा यों कहिये–
कैसे भाव बिकात वस्तु ऐसीं तेरे हित–
अर्थात् तेरे प्राप्त करने के हेतु इन वस्तुओं का

नाश वा दुर्गति को प्राप्त होना कैसी बुराई की बात है। इन वस्तुओं के लिये, ३६३ से ३६८ ; ३८३ से ३९२ ; ४०९ से ४२८ और ४४७ से ४६८ तककी पंक्तियां पढ़ो।

पंक्ति४९६-"मम समाज०" अर्थात् तेरे कारण जन समाज में मुझे लज्जा प्राप्त होती है, परन्तु तेरा मैं मनमें अभिमानी हूं। इस से यह ध्वनि निकलती है कि गोल्डस्मिथ कदाचित् जनसमाज में एक धनसम्पन्न स्वतन्त्रजीवी सज्जन समझा जाना चाहता था और इस बात के प्रगट होने से लजाता था कि उसका भरण पोषण कविता आदि लिखने के द्वारा चलता है। ग्रन्थारम्भ में उसका जीवन वृत्तान्त पढ़ो।

पंक्ति ४९९-५००-"तो सों लहि०"-यह पंक्ति दूसरी तरह यों हो सक्ती है-

तो सों ह्वै दर्शित पथ सुधरत शिल्प श्रेष्ठ सब-भाव यह है कि शिल्प जीवी जनों में यदि कवित्व गुण हो तो वे अपने शिल्प कार्य को बड़ी उन्नति पहुंचा सक्ते हैं।

"पालागन" करने से तात्पर्य यह है कि अब मैं तुझ से छुट्टी लेता हूं-अर्थात् कविता करना त्यागता हूं।



